



शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

शिक्षा, साहित्य, दर्शन, भारतीय ज्ञान, परम्परा, तकनीक
तथा शिक्षा अनुसंधान पद्धति: समकालीन
संदर्भ में एक बहुआयामी अध्ययन

प्रो. (डॉ.) मीनाक्षी सीठा

प्रोफेसर स्कूल ऑफ एजुकेशन

फेयरफील्ड इन्सिट्यूट ऑफ मैनेजमन्ट एवं टेक्नोलॉजी, दिल्ली

ई-मेल : meenakshi.123.sitha@gmail.com

शोध सार

वर्तमान वैश्विक परिवेश में, भारत अपनी प्राचीन ज्ञान, परम्परा और आधुनिक तकनीकी प्रगति के मार्ग पर खड़ा है। यह शोध पत्र "शिक्षा", "साहित्य-दर्शन", "भारतीय ज्ञान-परम्परा", "तकनीक" और "शिक्षा-अनुसंधान पद्धति" के बीच के जटिल एवं बहुआयामी संबंधों का समकालीन संदर्भों में विश्लेषण करता है। यह अध्ययन इस प्रश्न पर केंद्रित है कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान-परम्परा के मूल्य सिद्धांतों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली और तकनीकी नवाचारों के साथ एकीकृत किया जा सकता है, ताकि एक समग्र और प्रासंगिक शैक्षिक ढांचा तैयार हो सके। इसमें विशेष रूप से नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति: 2020 के परिप्रेक्ष्य में इन तत्वों के अन्तःसंबंधों की जांच की गयी है, जहाँ भारतीयता के मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने पर जोर दिया गया है। साहित्य-दर्शन को न केवल ज्ञान के भण्डार के रूप में, बल्कि आलोचनात्मक सोच और नैतिक विकास के प्रेरक के रूप में देखा गया है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी उपकरणों जैसे के उपयोग से अनुसंधान पद्धति में आ रहे मौलिक परिवर्तनों का मूल्यांकन किया गया है और यह देखा गया है कि ये उपकरण भारतीय ज्ञान के विशाल भण्डार तक पहुँच को कैसे सुगम बना सकते हैं। शोध का उद्देश्य एक ऐसे सन्तुलित मॉडल को प्रस्तावित करना है जहाँ तकनीक, ज्ञान-परम्परा और साहित्य-दर्शन मिलकर एक ऐसी शिक्षा प्रणाली को आकार दे सके जो स्थानीय जरूरतों के अनुरूप हो और वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो। यह बहुआयामी दृष्टिकोण न केवल

शिक्षा के आधुनिकीकरण पर बल देता है, बल्कि इसके आध्यात्मिकीकरण और मानवीकरण की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है। यह अंततः समग्र विकास को बढ़ावा देने वाली शिक्षा पद्धति की ओर इशारा करता है, जहाँ ज्ञान को टुकड़ों में नहीं, बल्कि एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में देखा जाता है, जैसे प्राचीन भारतीय चिन्ता में निहित है।

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञान-परम्परा, शिक्षा-अनुसंधान पद्धति, साहित्य-दर्शन, समग्र शिक्षा, तकनीकी एकीकरण।

1. परिचय

शिक्षा मानव सभ्यता की नींव रही है। आधुनिक युग में, यह नींव चार मुख्य स्तंभों पर टिकी है : ज्ञान-परम्परा, साहित्य-दर्शन, तकनीक और अनुसंधान पद्धति। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जहाँ युवा आबादी सबसे बड़ी सम्पत्ति है, इन स्तंभों का सामन्जस्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। स्वतन्त्रता के बाद से, भारतीय शिक्षा प्रणाली ने एक जटिल विकास यात्रा देखी है, जिसने औपचारिक विरासत को आधुनिक आवश्यकताओं के साथ मिलाने का प्रयास किया है।

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा को केवल सूचना या कौशल प्राप्ति तक सीमित नहीं किया जा सकता, यह व्यक्ति के चरित्र निर्माण और नैतिक बोध से जुड़ी प्रक्रिया है। यहीं पर भारतीय ज्ञान-परम्परा और साहित्य-दर्शन की प्रासंगिकता सामने आती है। जो वेदों, उपनिषदों और अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों में निहित है, शिक्षा को "सा विद्या या विमुक्तये" के रूप में देखता है, जो आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की मुक्ति को इंगित करता है (वर्मा, 2021)। समकालिन संदर्भों में, जहाँ तकनीक और कृत्रिम बुद्धि (AI) ज्ञान प्राप्ति के तरीके को बदल रहे हैं, इन पारंपरिक मूल्यों को तकनीकी प्रगति के साथ सन्तुलित करना आवश्यक है।

1.2 समस्या कथन

समकालीन शिक्षा प्रणाली में दोहरी समस्याएँ मौजूद हैं। पहला, पाठ्यक्रम का पश्चिमीकरण जिसका परिणाम भारतीय संदर्भों और स्वदेशी ज्ञान को हाशिए पर धकेल देता है। दूसरा, अनुसंधान पद्धति का यांत्रिकीकरण, जहाँ डाटा और सांख्यिकी पर अत्यधिक जोर दिया जाता है, जिस से मानवीय और सामाजिक विज्ञान के गुणात्मक पहलुओं की उपेक्षा होती है। तकनीकी उपकरणों का अन्धाधुन्ध उपयोग, किसी दर्शन या नैतिक दिशा-निर्देश के बिना, ज्ञान के उद्देश्य को विकृत कर सकता है। अतः समस्या यह है कि कैसे एक ऐसी अनुसंधान और शिक्षण पद्धति विकसित की जाए जो आधुनिक तकनीक का लाभ उठाते हुए भी भारतीयता के मूल्य में निहित समग्रता, नैतिकता और आत्म-बोध के सिद्धांतों को बनाए रखे।

1.3 शोध के उद्देश्य

- भारतीय ज्ञान-परम्परा के सिद्धांतों को समकालीन शिक्षा और पाठ्यक्रम में प्रभावी ढंग से एकीकृत करने के तरीकों का पता लगाना।

- साहित्य-दर्शन को केवल भाषा या इतिहास के विषय के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक, आलोचनात्मक और रचनात्मक शिक्षा के आधार के रूप में स्थापित करना।
- तकनीक (विशेषकर AI और डिजिटल उपकरण) के माध्यम से शिक्षा-अनुसंधान पद्धति में आए नवाचारों का मूल्यांकन करना और उनके नैतिक निहितार्थों पर विचार करना।
- एक ऐसा बहुआयामी मॉडल प्रस्तावित करना जो ज्ञान-परम्परा, तकनीक और दर्शन को शिक्षा के एक समग्र लक्ष्य के लिए एकीकृत करता हो।

1.4 शोध प्रश्न

- समकालीन शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान-परंपरा की प्रासंगिकता को कैसे पुनर्स्थापित किया जा सकता है?
- तकनीक किस प्रकार शिक्षा-अनुसंधान को मानवीय और नैतिक बनाते हुए उसकी दक्षता और पहुँच में वृद्धि कर सकती है।?
- साहित्य-दर्शन शिक्षा में मूल्य-आधारित दृष्टिकोण को कैसे सुदृढ़ करता है?

2. साहित्य अवलोकन

2.1 भारतीय ज्ञान-परम्परा पर विमर्श

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में ज्ञान के स्रोतों (प्रमाण) पर गहन चर्चा मिलती है। न्याय दर्शन छः प्रकार के प्रमाणों का उल्लेख करता है : प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि (व्यास, 2019)। ये प्रमाण आधुनिक अनुसंधान पद्धति के मूल आधार हैं। गुरु कुल प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक कौशल नहीं, बल्कि स्वयं और ब्रह्माण्ड के बीच सम्बन्ध को समझना था। आधुनिक अध्ययन (सिंह और गुप्ता, 2022) रा.शि.नी. 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान-परम्परा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता पर बल देते हैं, परन्तु इसके कार्यान्वयन में आ रही चुनौतियों को भी रेखांकित करते हैं।

2.2 शिक्षा नीति और साहित्य-दर्शन

साहित्य-दर्शन, जिसमें काव्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र और भाषा विज्ञान शामिल हैं, आलोचनात्मक चिन्ता को विकसित करने का मुख्य साधन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, "भारत केन्द्रीय शिक्षा" पर बल देती है, जहाँ साहित्य और कलाओं को पुनर्जीवित करने की बात की गयी है। श्री रविन्द्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन और महात्मा गाँधी के बुनियादी शिक्षा दर्शन ने भी साहित्य और कला के माध्यम से मानव के भावनात्मक और नैतिक विकास पर जोर दिया था (राय, 2020)। शिक्षा में संस्कृत को पुनर्जीवित करने का प्रयास भी इसी दर्शन का हिस्सा है, क्योंकि यह प्राचीन ज्ञान तक पहुँच का द्वार है।

2.3 तकनीक और अनुसंधान में नवाचार

वैश्विक स्तर पर, AI, मशीन लर्निंग, और विशाल आँकड़े अनुसंधान पद्धतियों को बदल रहे हैं। तकनीकी उपकरण विशाल डाटा का विश्लेषण, पैटर्न पहचान और साहित्य समीक्षा को सरल बनाते हैं। हालाँकि, (चक्रवर्ती, 2021) यह भी बताते हैं कि

तकनीक डाटा को अत्यधिक तटस्थ बना देती है, जिस से मानवीय अनुभव और संदर्भ-आधारित समझ, जो गुणात्मक शोध का मूल है, को नुकसान पहुँच सकता है। इस प्रकार अनुसंधान में 'पद्धति' पर ध्यान केंद्रित करने के बजाए 'निष्कर्ष' पर अधिक जोर दिया जाता है।

3. भारतीय ज्ञान-परम्परा और समग्र शिक्षा का दर्शन

भारतीय ज्ञान-परम्परा में शिक्षा का उद्देश्य समग्र विकास है। यह मानव के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयाम को एक साथ विकसित करने पर बल देती है।

3.1 पंचकोश सिद्धांत और शिक्षा

तैत्तिरीय उपनिषद् में वर्णित पंचाकोश सिद्धांत मानव अस्तित्व को पाँच स्तरों में विभाजित करता है:— अन्नमय कोश (भौतिक शरीर), प्राणमय कोश (प्राण/ऊर्जा), मनोमय कोश (मन), विज्ञानमय कोश (बुद्धि/विवेक) और आनन्दमय कोश (आध्यात्मिक आनंद)। भारतीय शिक्षा दर्शन का लक्ष्य इन सभी कोशों का सन्तुलित विकास करना रहा है।

कोष	आयाम	शिक्षा में प्रासंगिकता
अन्नमय	भौतिक	योग, स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक श्रम
प्राणमय	प्राण/ऊर्जा	श्वास अभ्यास, जीवन शक्ति प्रबंधन
मनोमय	मन	भाषा, कला, भावनात्मक, बुद्धिमता
विज्ञानमय	बुद्धि/विवेक	तर्कशास्त्र, विज्ञान, आलोचनात्मक सोच
आनंदमय	आध्यात्मिक आनंद	ध्यान, दर्शन, आत्म-बोध

शिक्षा-अनुसंधान में, इसका अर्थ है कि केवल संज्ञानात्मक विकास पर ध्यान केंद्रित न किया जाए, बल्कि अनुसंधान के माध्यम से भावनात्मक, नैतिक और शारीरिक आयामों की भी जाँच की जाए।

3.2 साहित्य-दर्शन: नैतिक और आलोचनात्मक आधार

साहित्य-दर्शन, विशेष रूप से रस सिद्धांत, व्यक्ति की भावनाओं को समझने और उनका प्रबंधन करने की क्षमता प्रदान करता है। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य जटिल नैतिक दविधाओं और मानवीय सम्बन्धों को उजागर करते हैं, जो छात्रों में नैतिक विवेक को जागृत करते हैं। इन ग्रन्थों का अध्ययन छात्रों को संदर्भ-संवेदनशील तरीके से सोचने में मदद करता है, जो आधुनिक अनुसंधान की कठोरता को मानवीय स्पर्श देता है।

• शिक्षा में साहित्य का अनुप्रयोग : साहित्यिक ग्रन्थों के माध्यम से केस स्टडीज़ तैयार करना एक प्रभावी शैक्षिक पद्धति है। इसके अन्तर्गत महाभारत, रामायण, पंचतंत्र

आदि ग्रन्थों से चुनी हुई कथानकों, पात्र और परिस्थितियों को छात्रों के समक्ष रखा जाता है। छात्र इन परिस्थितियों में निहित नैतिक दुविधाओं पर विचार करते हैं और यह निर्णय लेने का अभ्यास करते हैं कि किस परिस्थिति में कौन सा निर्णय सही, न्यायोचित और समाज के लिए उपयोगी हो सकता है। इस प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों में न केवल आलोचनात्मक चिन्तन विकसित होता है, बल्कि उनका नैतिक विवेक, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व भी सशक्त होता है। इस तरह साहित्य शिक्षा को केवल पाठ्य पुस्तकों तक सीमित न रखकर जीवन के वास्तविक अनुभवों से जोड़ देती है।

3.3 ज्ञानमीमांसा में भारतीय दृष्टिकोण

भारतीय दर्शन में ज्ञान को स्थिर और निष्पत्ति इकाई के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि इसे एक निरंतर, गतिशील और अनुभवात्मक प्रक्रिया माना गया है। यह ज्ञानमीमांसा की मुख्य विशेषता है कि ज्ञान केवल पुस्तकों, सिद्धांतों या तथ्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि स्व-अनुभव और चिन्तनमन का परिणाम है। अद्वैत वेदांत में ज्ञान का अंतिम लक्ष्य अज्ञान को दूर करना बताया गया है, क्योंकि अज्ञान ही मानव दुःख और बंधन का मुख्य कारण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार यथार्थ ज्ञान वह है जो मानव को स्वयं के स्वरूप की पहचान कराये और उसे समाज के प्रति उत्तरदायित्व के प्रति चेतनावंद बनाये।

इस भारतीय ज्ञानमीमांसायीय दृष्टिकोण का आधुनिक अनुसंधान पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आधुनिक अनुसंधान जहाँ प्रायः तथ्यों की जांच, साक्ष्य संग्रह और तकनीकी परिष्कार पर केंद्रित रहता है, वहाँ भारतीय दर्शन इस प्रक्रिया को नैतिक दिशा देता है। इसके अनुसार अनुसंधान का उद्देश्य केवल नए तथ्यों या सिद्धांतों का निर्माण नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज और मानव अस्तित्व से जुड़ी समस्याओं का समाधान करना भी होना चाहिए।

भारतीय दर्शन यह भी बताता है कि अनुसंधानकर्ता को अपने कार्य के साथ-साथ अपनी नैतिक जिम्मेदारी को भी समझना चाहिए। अनुसंधान का प्रयोग यदि समाज के हित के स्थान पर हानिकारक उद्देश्यों के लिए किया जाता है तो वह ज्ञान नहीं, बल्कि अज्ञान का विस्तार होता है। इसलिए भारतीय ज्ञानमीमांसा में ज्ञान का मूल्य केवल उसके परिणाम में नहीं, बल्कि उसके उद्देश्य और प्रयोग में भी निर्धारित होता है।

इस प्रकार भारतीय दृष्टिकोण अनुसंधान को मानवता, नैतिकता और समाजकल्याण से जोड़ता है और इस तथ्य को रेखांकित करता है कि ज्ञान का अंतिम लक्ष्य मानव जीवन को अधिक सार्थक, संवेदनशील और समाज के लिए उपयोगी बनाना है।

4. तकनीक, शिक्षा और अनुसंधान पद्धति का एकीकरण

4.1 तकनीक द्वारा भारतीय ज्ञान-परम्परा का प्रसार

तकनीकी के विकास ने भारतीय ज्ञान-परम्परा को नए आयाम प्रदान किए हैं। डिजिटलीकरण इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण आधार है। प्राचीन पांडुलिपियों, ताड़

पत्र, भोरपत्र, ताम पत्र और पुस्तकों में संकलित संस्कृत, पाली, प्राकृत और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के ग्रंथों का बड़े पैमाने पर डिजिटलीकरण किया जा रहा है। इससे एक ओर जहाँ इन ग्रंथों का संरक्षण सुनिश्चित होता है, वहीं दूसरी ओर यह ज्ञान दुनिया भर के शोधकर्ताओं, अध्यापकों और छात्रों के लिए सुलभ हो जाता है।

डिजिटलीकरण के पूर्व प्राचीन ग्रंथों तक पहुँच केवल चुने हुए विद्वानों तक सीमित रहती थी। कुछ ग्रंथ तो एक ही स्थान या एक ही संस्था में उपलब्ध थे, जिनसे उनका अध्ययन अत्यंत कठिन था। डिजिटल तकनीकी ने इस सीमिता को समाप्त कर दिया है। अब एक शोधकर्ता भारत या विदेश के किसी भी कोने से डिजिटल पुस्तकालयों, ऑनलाइन पोर्टलों और डाटाबेस के माध्यम से इन ग्रंथों का अध्ययन कर सकता है।

इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि डिजिटलीकरण ने भारतीय ज्ञान को केवल प्राचीन या पारंपरिक होने के बंधन से मुक्त किया है। अब इन ग्रंथों का प्रयोग आधुनिक अनुसंधान, अंतरविषयक अध्ययन, भाषा विज्ञान, दर्शन, इतिहास, योग, आयुर्वेद और शिक्षा के क्षेत्र में नए सिद्धांतों और दृष्टिकोण विकसित करने के लिए किया जा रहा है। इस प्रकार डिजिटल तकनीकी भारतीय ज्ञान-परम्परा को भूतकाल से जोड़कर भविष्य के लिए प्रासंगिक बनाती है।

साथ ही, डिजिटलीकरण भारतीय ज्ञान के लोकीकरण में भी सहायक है। जब इन ग्रंथों के अध्ययन के लिए भौतिक सीमाओं की आवश्यकता नहीं रहती, तो सामान्य छात्र, शिक्षक और ज्ञान के प्रति रूचि रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति भी इन पुस्तकों से लाभ उठा सकता है। इस प्रकार तकनीकी भारतीय ज्ञान-परम्परा को केवल संरक्षित ही नहीं करती, बल्कि उसे समाज के व्यापक वर्ग तक पहुँचाकर उसे जीवन के वास्तविक परिप्रेक्ष्य में उपयोगी बनाती है।

4.2 अनुसंधान पद्धति में कृत्रिम बुद्धि आधारित नवाचार

आधुनिक अनुसंधान पद्धति में कृत्रिम बुद्धि, AI और डाटा विश्लेषण ने महत्वपूर्ण नवाचार की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। जहाँ परम्परागत अनुसंधान पद्धतियाँ समय, श्रम और मानव क्षमता पर अधिक निर्भर रहती थीं, वहीं कृत्रिम बुद्धि आधारित तकनीकें इन सीमाओं को कम करती हैं।

कृत्रिम बुद्धि का उपयोग अनुसंधान में डाटा संग्रह, वर्गीकरण, प्रतिरूप पहचान, साहित्य समीक्षा और प्रतिपत्ति विश्लेषण में किया जा रहा है। साहित्य समीक्षा के क्षेत्र में AI आधारित सॉफ्टवेयरों के माध्यम से हजारों ग्रंथों, शोध लेखों और दस्तावेजों का तुलनात्मक अध्ययन संभव हुआ है। इससे शोधकर्ताओं को अपने अध्ययन के लिए अधिक समय विचार, विश्लेषण और सिद्धांतों के निर्माण में लगाने का अवसर मिलता है।

अनुसंधान पद्धति में कृत्रिम बुद्धि न केवल तकनीकी सहायक की भूमिका निभा रही है, बल्कि यह अनुसंधान के दृष्टिकोण को भी बदल रही है। AI के माध्यम से पूर्वानुमान, प्ररूपण और समस्या समाधान के नए तरीकों का विकास हो रहा है। शिक्षा अनुसंधान

में छात्रों के अधिगम व्यवहार, अभिरूचि, प्रदर्शन और परिणामों का विश्लेषण करके व्यक्तिगत शिक्षा के नए मॉडल तैयार किए जा रहे हैं।

यद्यपि कृत्रिम बुद्धि अनुसंधान को अधिक प्रभावी और गतिशील बनाती है, तथापि इसके साथ कुछ नैतिक प्रश्न भी जुड़े हैं। डाटा की गोपनीयता, सहायक संभावनाएं, पक्षपात और मानव निर्णय की भूमिका जैसे प्रश्न अनुसंधान पद्धति में नए चिन्ता का विषय हैं।

4.3 ब्लेंडेड लर्निंग और भारतीय संदर्भ

ब्लेंडेड लर्निंग (Blended Learning) आधुनिक शिक्षा पद्धति का एक महत्वपूर्ण रूप है, जिसमें पारंपरिक कक्षा शिक्षा और डिजिटल तकनीकी आधारित शिक्षा का सुसमर्पित संयोजन किया जाता है। भारतीय संदर्भ में इस पद्धति का विशेष महत्व है, क्योंकि भारत में शिक्षा की परम्परा गुरु-शिष्य परम्परा पर आधारित रही है। ब्लेंडेड लर्निंग इस परम्परा को नष्ट किए बिना आधुनिक तकनीकी से जोड़ने का कार्य करता है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विविधता एक मुख्य विशेषता है। विभिन्न भाषाएं, संस्कृतियां, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां और क्षेत्रीय अन्तर शिक्षा के क्षेत्र में एक ही मॉडल को प्रभावी नहीं होने देते। इस परिस्थिति में ब्लेंडेड लर्निंग एक लचीला और समयोचि शिक्षा मॉडल के रूप में उभरता है। इसके माध्यम से शिक्षक पारंपरिक कक्षा में साक्षात्कार शिक्षण के साथ-साथ ऑनलाइन सामग्री, डिजिटल संसाधन, वीडियो, ई-कन्टेंट और स्वयंशिक्षा माध्यमों का उपयोग कर सकता है।

भारतीय संदर्भ में ब्लेंडेड लर्निंग का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह शहरी और ग्रामीण शिक्षा के बीच की खाई को कम करने में सहायक है। जहाँ एक ओर प्रतिष्ठान संस्थाओं में आधुनिक तकनीकी उपलब्ध है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में साधन की कमी रहती है। ऑनलाइन माध्यमों और मॉड्यूल तकनीकी के प्रयोग से ब्लेंडेड लर्निंग ग्रामीण छात्रों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से जोड़ने का अवसर प्रदान करता है।

साथ ही, ब्लेंडेड लर्निंग भारतीय ज्ञान-परम्परा के प्रसार में भी उपयोगी है। योग, आयुर्वेद, दर्शन, संस्कृत साहित्य और पारंपरिक विद्याओं को डिजिटल माध्यमों के माध्यम से प्रस्तुत करके छात्रों में अपनी संस्कृति

5. समकालीन संदर्भों में बहुआयामी मॉडल का प्रस्ताव

5.1 ज्ञान के केन्द्र में "विवेक"

भारतीय दर्शन में ज्ञान का केन्द्र बिन्दु "विवेक" को माना गया है। विवेक का अर्थ केवल सही और गलत के बीच अंतर करना नहीं है, बल्कि यह शक्त व्यवहारिक और दर्शनिक क्षमता है जिसके माध्यम से मानव यथार्थ और अयथार्थ, सत्य और असत्य, स्थायी और अस्थायी के बीच सूचक अंतर करता है। इस दृष्टिकोण से विवेक ज्ञान की प्राप्ति का नहीं, बल्कि ज्ञान के सही प्रयोग का मार्गदर्शक है।

भारतीय ज्ञानमीमांसा में विवेक को ज्ञान का प्रथम सोपान माना गया है। बिन विवेक के प्राप्त ज्ञान अज्ञान में परिवर्तित हो सकता है। इसलिए विवेक का विकास मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है। उपनिषद, भगवद्गीता और वेदांत दर्शन में स्पष्ट किया गया है कि जो व्यक्ति विवेक से रहित है, वह ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी संशय और भ्रम में ही रहता है।

आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान के संदर्भ में विवेक का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। आधुनिक युग में डाटा, सूचना और तथ्यों की अधिकता है, परन्तु इन सूचनाओं का सही मूल्यांकन विवेक के बिना संभव नहीं है। विवेक शोधकर्ता को यह क्षमता प्रदान करता है कि वह उपलब्ध डाटा में से सार्थक, उपयोगी और नैतिक रूप से सही तथ्यों का चयन कर सके।

शिक्षा में विवेक का विकास छात्रों को आलोचनात्मक चिन्ता, नैतिक निर्णय और जिम्मेदार नवग्रह के लिए तैयार करता है। यदि शिक्षा केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित रह जाये, तो वह ज्ञान के स्थान पर अज्ञान उत्पन्न कर सकती है। इसलिए भारतीय दर्शन शिक्षा को विवेक विकास का माध्यम मानता है।

इस प्रकार “विवेक” ज्ञान का केवल केन्द्र ही नहीं, बल्कि वह तत्त्व है जो ज्ञान को मानव कल्याण, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है। विवेक के बिना ज्ञान शक्ति नहीं, और विवेक के साथ ज्ञान मानव जीवन को सार्थक बनाने का साधन बन जाता है।

5.2 शिक्षक प्रशिक्षण में परिवर्तन

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति तक सीमित नहीं रह गयी है। आधुनिक युग में शिक्षक को एक मार्गदर्शक, प्रेरण स्रोत और मानव मूल्यों का संरक्षक माना जा रहा है। इस परिवर्तन के कारण शिक्षक प्रशिक्षण में भी व्यापक संशोधन और नवीकरण की आवश्यकता उत्पन्न हुई है।

भारतीय शिक्षा परम्परा में शिक्षक को “गुरु” की संज्ञा दी गई है, जो केवल विद्या प्रदान नहीं, बल्कि छात्र के जीवन, चरित्र और नैतिक विकास का मार्गदर्शन करता है। गुरु-शिष्य परम्परा में शिक्षा एक एकात्म्यी संवाद की प्रक्रिया थी, जहाँ शिक्षक छात्र के प्रश्न, संशय और रचि को समझते हुए उसके विकास में सहायक बन जाता था। आधुनिक शिक्षा में इस दर्शन को पुनः स्थापित करना आवश्यक है।

आधुनिक शिक्षक प्रशिक्षण में तकनीकी क्षमता के साथ-साथ दर्शनिक और नैतिक प्रशिक्षण का समावेश आवश्यक है। केवल डिजिटल साधनों, AI और ऑनलाइन शैक्षणिक माध्यमों का प्रयोग करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी आवश्यक है कि शिक्षक इन साधनों का उपयोग विवेक, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ करे।

शिक्षक प्रशिक्षण में परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि शिक्षकों को केवल पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण करने के लिए तैयार न किया जाये, बल्कि उन्हें छात्रों के समस्यात्मक, भावनात्मक और नैतिक पहलुओं को समझने की क्षमता भी प्रदान की

जाये। यह छात्र को एक सम्पूर्ण मानव के रूप में देखने की दृष्टि शिक्षकों में विकसित करता है।

NPE 2020 के संदर्भ में शिक्षक प्रशिक्षण को बहुविषयक, समावर्षी और जीवन-केन्द्र में स्थित करने पर बल दिया गया है। इस नीति के अंतर्गत शिक्षक को केवल पाठ्यपुस्तक के प्रयोगकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान के निर्माता, अनुसंधान कर्ता और सामाजिक परिवर्तन के अभिकर्ता के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है।

इस प्रकार शिक्षक प्रशिक्षण में यह परिवर्तन शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुखी न बनाकर, चरित्र-निष्ठा, नैतिकता और विवेक-आधारित शिक्षा के रूप में स्थापित करता है। शिक्षक का इस नया रूप ही भारतीय शिक्षा व्यवस्था को समाज और राष्ट्र के सतत् विकास की दिशा में अग्रसर कर सकता है।

5.3 समाज की आवश्यकताओं पर आधारित अनुसंधान

भारतीय ज्ञानमीमांसा में अनुसंधान का प्राथमिक उद्देश्य समाज की वास्तविक समस्याओं को समझना और उनका समाधान खोजना रहा है। इस दृष्टिकोण में अनुसंधान केवल शोधकर्ता की व्यक्तिगत रुचि या एकेडमिक प्रतिष्ठा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाज के कल्याण से जोड़ा हुआ है। इसी कारण भारतीय परम्परा में ज्ञान को “लोकाभिमान” से जोड़कर देखा गया है।

आधुनिक युग में अनुसंधान प्रायः डाटा, तकनीक और विषय विशेष तक सीमित हो गया है। इससे शोध के परिणाम समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से दृष्टिकोण में कट जाते हैं। इसलिए समाज की आवश्यकताओं पर आधारित अनुसंधान की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। यह अनुसंधान समाज की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक और नैतिक समस्याओं को केन्द्र में रखता है।

भारतीय संदर्भ में समाज आधारित अनुसंधान का अर्थ है— स्थानीय समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करना। ग्रामीण शिक्षा, पारंपरिक हस्तकलाओं का संरक्षण, लोक ज्ञान, आयुर्वेदीय परम्परा, नारी सशक्तिकरण और समावेशी शिक्षा जैसे विषय इसके मुख्य क्षेत्र हैं। इस प्रकार का अनुसंधान समाज के असेचित वर्गों को आवाज देता है और शिक्षा को समाज से जोड़ता है।

तकनीकी का प्रयोग समाज आधारित अनुसंधान को और प्रभावी बना सकता है। डिजिटल सर्वे, डाटा विश्लेषण, भू-सूचना तकनीक और AI आधारित विश्लेषण के माध्यम से स्थानीय समस्याओं की सही पहचान और गहरी समझ सम्भव होती है। परन्तु यह आवश्यक है कि तकनीकी का प्रयोग समाज की संवेदनशीलता और नैतिकता के साथ किया जाये। बिन मानव संवेदन के तकनीकी अनुसंधान समाज के लिए उपयोगी नहीं रहता।

समाज आधारित अनुसंधान शोधकर्ता को यह दृष्टि प्रदान करता है कि वह समाज को केवल शोध का विषय न माने, बल्कि उसका भागीदार बन करे। इस प्रक्रिया में समाज

के सदस्य शोध के सह-निर्माता बन जाते हैं, जो भारतीय लोक परम्परा और सहभागितात्मक दर्शन के अनुरूप है।

इस प्रकार समाज की आवश्यकताओं पर आधारित अनुसंधान शिक्षा और ज्ञान को समाज की वास्तविक समस्याओं से जोड़कर उसे मानव कल्याण का प्रभावी साधन बनाता है। यह अनुसंधान शिक्षा को केवल पुस्तकों तक सीमित न रखकर, समाज की क्रियात्मक परिवर्तनशीलता से जोड़ता है।

6. निष्कर्ष और सुझाव

6.1 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध का मुख्य निष्कर्ष यह है कि शिक्षा, साहित्य-दर्शन, भारतीय ज्ञान-परम्परा तकनीक और शिक्षा-अनुसंधान पद्धति एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, बल्कि ये सभी एक-दूसरे के पूरक, सहायक और आपस में जुड़े हुए तत्व हैं। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का सम्पूर्ण विकास तभी संभव है जब उसमें ज्ञान परम्परा की गहराई, साहित्य की संवेदनशीलता, दर्शन की नैतिकता और तकनीकी की क्षमता का सन्तुलित समन्वय हो।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी का प्रयोग अनिवार्य हो गया है, परन्तु यह शोध यह भी स्पष्ट करता है कि तकनीकी केवल एक साधन है, शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं। यदि तकनीकी का उपयोग विवेक और नैतिक दृष्टि के बिना किया गया, तो शिक्षा केवल डाटा, कृत्रिम बुद्धि और यांत्रिकी कुशलता तक सीमित हो जाती है। इस शोध के निष्कर्ष में यह बात उभरकर आती है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा इस तकनीकी युग को मानवी और नैतिक दिशा दे सकती है।

साहित्य-दर्शन का महत्व इस शोध में विशेष रूप से उभरकर आता है। साहित्य शिक्षा को मानव अनुभव, नैतिक दृष्टि और संवेदनशील चिन्ता से जोड़ता है। यह छात्रों में विवेक, समवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करता है। इस प्रकार साहित्य-दर्शन केवल पाठ्य विषय नहीं, बल्कि शिक्षा की आत्मा है।

इस शोध का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि शिक्षा-अनुसंधान पद्धति को समाज की वास्तविक आवश्यकताओं से जोड़ना आवश्यक है। अनुसंधान केवल विषयक या प्रकाशन-केन्द्र न होकर समाज की समस्याओं का समाधान खोजने का साधन बनाना चाहिए। भारतीय दर्शन अनुसंधान को नैतिकता, समाजक कल्याण और मानव विकास से जोड़ता है।

6.2 नीतिगत सुझाव

प्रस्तुत शोध के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रथम, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में भारतीय ज्ञान-परम्परा और तकनीकी अनुसंधान केन्द्र स्थापित किए जाएं। इन केन्द्रों में प्राचीन ज्ञान का अध्ययन, डिजिटलीकरण, और आधुनिक संदर्भ में उपयोग किया जाए।

द्वितीय, अंतर्विषयक पाठ्यक्रम विकसित किए जाएं, जिनमें विज्ञान, तकनीकी, साहित्य, दर्शन और समाज विज्ञान को एक साथ जोड़ा जाए। इससे छात्रों में बहुविषयक चिन्ता और समग्र दृष्टि विकसित होगी।

तृतीय, अनुसंधान नैतिकता के पाठ्यक्रम में भारतीय मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, अर्पण, सामुदायिकता और समाजक उत्तरदायित्व को शामिल किया जाए। विशेषतः AI डाटा विश्लेषण और डिजिटल अनुसंधान के संदर्भ में यह अत्यंत आवश्यक है।

6.3 भविष्य का क्षेत्र

भविष्य के अनुसंधान के लिए इस शोध से अनेक नए द्वार खुलते हैं। भविष्य में पंचकोश सिद्धांत पर आधारित शिक्षा मूल्यांकन मॉडल विकसित किए जा सकते हैं, जिनसे छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास का समग्र मूल्यांकन हो सके।

इसके अतिरिक्त भारतीय तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा पर आधारित कृत्रिम बुद्धि मॉडल विकसित करने का क्षेत्र भी विस्तार पा सकता है। ऐसा AI जो विवेक, संदर्भ और नैतिकता को समझ सके, आधुनिक तकनीकी को भारतीय दर्शन के साथ जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

इस प्रकार यह शोध शिक्षा को केवल वैज्ञानिक या व्यवसायिक दृष्टि से न देखकर, उसे मानव, नैतिक और सामाजिक विकास का साधन मानता है। यही इस शोध का अंतिम निष्कर्ष है और यही भारतीय शिक्षा के भविष्य की दिशा भी है।

सन्दर्भ

चक्रवर्ती, एस. (2021) डिजिटल युग में अनुसंधान नैतिकता : एक भारतीय परिप्रेक्ष्य शोध सार जर्नल, 15(2) 112 – 130।

राय, ए. (2020), गाँधी और टैगोर का शिक्षा दर्शन : NEP 2020 के संदर्भ में शैक्षिक चिन्ता, 8(4), 55–70।

सिंह, आर., एवं गुप्ता, वी. (2022) भारतीय ज्ञान-परम्परा का उच्च शिक्षा में एकीकरण : अवसर और चुनौतियाँ, शिक्षा और समाज, 3(1), 20–35।

वर्मा, पी. क. (2021), भारतीय दर्शन में ज्ञानमीमांसा, प्रभात प्रकाशन।

व्यास, के. एल. (2019), न्याय दर्शन : प्रमाण मीमांसा, साहित्य अकादमी।

शर्मा, एस. (2018), भारतीय शिक्षा परम्परा और आधुनिक चुनौतियाँ, नयी दिल्ली : राजीव प्रकाशन।

पाण्डे, आर. एस. (2020), शिक्षा में नैतिक मूल्यों का महत्व : एक दर्शनिक अध्ययन, भारतीय शिक्षा समीक्षा, 12(1), 45–60।

गुप्ता, डी. एस. (2021) कृत्रिम बुद्धि और शिक्षा : संभावनाएँ और नैतिक प्रश्न, शोध प्रतिभा, 9(3), 88–102।

कुमार, पी. (2019), साहित्य और शिक्षा : मानवी संवेदनशीलता का विकास. वाराणसी : भारतीय ज्ञान प्रकाशन।

मिश्र, ए. एस. (2022), अनुसंधान पद्धति और भारतीय दर्शन, शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 6(2), 15–29।

सिंह, जे. पी. (2020), NEP 2020 : भारतीय शिक्षा की नयी दिशा, नयी दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

पाण्डे, एम. (2021), शिक्षा में अंतर्विषयक दृष्टि : सैद्धांतिक और प्रायोगिक आधार, शिक्षा विज्ञान जर्नल, 14(1) 66–80।